बी० ए० पार्ट-II, पेपर - 3 दिनांक - 30/04/2020

डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner

रीतिकाल

नामकरण एवं वर्गीकरण :— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संवत 1700 वि. से 1900 वि. (1643-1843ई.) तक के कालखण्ड को रीतिकाल की संज्ञा प्रदान की है। उनके अनुसार इस काल में 'रीति ग्रन्थ' प्रधानता को ध्यान में रखते हुए इसका नामकरण रीतिकाल किया गया है। इस काल के अधिकांश कवियों ने आचार्यत्व का निर्वाह करते हुए लक्षण ग्रन्थों की परिपाटी पर रीति ग्रन्थों की रचना की जिनमें अलंकार, रस नायिका भेद आदि काव्यांगों का विस्तृत विवेचन किया गया। काव्यांगों के लक्षण एवं स्वरचित उदाहरण प्रस्तुत करने वाले रीति ग्रन्थों की प्रचुरता के कारण ही इस काल में रीति तत्व की प्रधानता परिलक्षित होती है, इसी कारण इस काल का नाम रीतिकाल रखा गया है।

संस्कृत में 'रीति' शब्द का प्रयोग आचार्य वामन ने एक विशेष सम्प्रदाय 'रीति सम्प्रदाय' का प्रवर्तन करते हुए किया। उनके अनुसार "विशिष्ट पद रचना रीति..." अर्थात विशेष प्रकार की पद रचना रीति है। रीति का अर्थ शैली, पद्धति एवं मार्ग भी है रीति ग्रन्थ का तात्पर्य काव्यांग निरूपण करने वाले लक्षण ग्रन्थों से लिया गया है। जिन ग्रन्थों में अलंकार, रस, ध्वनि, गुण, दोष, नायिका भेद, आदि काव्य तत्वों का निरूपण लक्षण उदाहरण शैली में किया गया उन्हें रीति ग्रन्थ कहा गया। इन रीति ग्रन्थों को लक्षण ग्रन्थ भी कहा गया।

रीति ग्रन्थों की रचना प्रायः काव्य शिक्षा देने उद्देश्य से तथा अपनी काव्य प्रतिभा एवं पाण्डित्य प्रदर्शन के उद्देश्य से की है आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार

"लक्षण ग्रन्थों की परिपाटी पर रचना करने वाले रीतिकाल के सैकड़ों कवि वस्तुतः आचार्य कोटि में नहीं आते"।

रीतिकाल का वर्गीकरण

रीतिकाल के कवियों को सामान्यतः तीन वर्गों में बाटा गया है:

① **रीतिबद्ध कवि** :— जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ लिखे हैं, जैसे — देव, मतिराम, चिन्तामणि, कुलपति मिश्र, मण्डन

② **रीतिसिद्ध कवि** :— जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखे किन्तु रीति की जानकारी का उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किया जैसे — बिहारी।

③ **रीतिमुक्त कवि** :— जिन्होंने न तो लक्षण ग्रन्थ लिखे और न रीति की जानकारी का उपयोग किया। हृदय की स्वतन्त्र वृत्तियों पर काव्य रचना करने वाले ये कवि रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त हैं अतः रीतिमुक्त कवि कहलाए, जैसे — घनानन्द, बोधा, आलम और ठाकुर।

Scanned with CamScanner